स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

'मानविकी संकाय' के अंतर्गत 'हिन्दी' विषय में पीएच्.डी. ('विद्यावाचस्पति')
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की प्रथम रूपरेखा

"डॉ. सूर्यबाला के साहित्य में चित्रित समस्याएँ"

शोध-छात्र

कोतवाल मजहर मक़बुल
(एम्.ए., एम्.फिल. (हिन्दी))
सहयोगी प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
आझाद महाविद्यालय, औसा, ता. औसा, जि. लातुर

शोध-निर्देशक

डॉ. प्रवीण विश्वनाथ कांबळे
(एम्.ए. (हिन्दी), बी.एड्., सेट, पीएच्.डी.)
हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा शोध-निर्देशक
कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा, ता. औसा, जि. लातुर

अनुसंधान-केन्द्र

महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातुर

जून - 2019

''डॉ. सूर्यबाला जी के साहित्य में चित्रित समस्याएँ''

- **भूमिका :**

हिन्दी साहित्य विधाओं में से कथा-साहित्य पढ़ने में मुझे छात्रावस्था से ही रूचि रही है। एम.फिल. के पश्चात् मैंने हिन्दी की महिला साहित्यकारों का कथा-साहित्य पढ़ना आरंभ किया था। इसी दौरान डॉ. सूर्यबाला जी का कथा-साहित्य पढ़ने में आया। उनके कथा-साहित्य में चित्रित समस्याओं ने मेरे मन को झक़झोर दिया, तो मैंने उन्हीं के कथा-साहित्य में चित्रित समस्या को लेकर हिन्दी में पीएच.डी. अर्थात् विद्यावाचस्पति उपाधि के लिए अध्ययन करने की ठान ली।

डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में घरेलु एवं पारिवारिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ, दम्पति जीवन तथा समाज के स्तर पर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की हकीक़त, मनुष्य की मानसिकता, रूढ़ियों एवं कुरीतियों का सच, दिशाहीन छात्रावस्था आदि विषय प्रमुख रहे हैं।

मैंने डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित समस्याओं का गहरा अध्ययन करने हेतु पीएच.डी. की उपाधि के लिए **''डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित समस्याएँ''** यह विषय चुना। सौभाग्यवश इस विषय पर मेरे औसा शहर में स्थित कुमारस्वामी महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण कांबले जी ने अपने निर्देशन अनुसंधान करने के लिए चर्चा के उपरान्त सहर्ष स्वीकृति दी।

डॉ. सूर्यबाला जी ने अपने कथा-साहित्य के द्वारा मनुष्य जीवन की विभिन्न समस्याओं का, विशेष कर नारी जीवन, छात्र जीवन, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की समस्याओं का बड़ा यथार्थ से चित्रण किया है। उनकी रचनाओं ने मुझे काफ़ी हद तक़ गहरा प्रभावित किया। तत्पश्चात् मैंने विशेष रूचि से डॉ. सूर्यबाला जी का कथा-साहित्य पढ़ा तो उनके प्रति मेरे मन में श्रद्धा का भाव बढ़ता गया।

- **विषय चयन का महत्त्व :**

साठोत्तर युग में अपनी लेखनी द्वारा महिला लेखिकाओं में ख्याति पाने श्रेय डॉ. सूर्यबाला जी को है। उनका जीवन कहानीकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार एवं सबसे हटकर एक सहृदयी व्यक्ति के रूप में काफ़ी विविधता तथा संघर्षमय भी है। उनका कथा-साहित्य समाज के लिए एक आदर्श है। वस्तुतः, उनका जीवन तथा साहित्य समाज एवं मनुष्य को समझने का एहसास है। उन्होंने समाज के हर समस्या को अपने नजरिये से उभारकर उसका समाधान देने की कोशिश भी की है। डॉ. सूर्यबाला जी ने मनुष्य जीवन के प्रत्येक कोण पर लिखने का प्रयास किया है। महिला कथा-साहित्यकारों पर अल्प मात्रा में शोध-कार्य हुआ है। डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य पढ़ने से अपनी समस्या का समाधान पाठकों तथा आम आदमी को मिलता है या नहीं, इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-कार्य करने का होगा। इस दिशा में प्रस्तुत विषय चयन का महत्त्व है।

- **अनुसंधान की परिकल्पनाएँ (Hyopothesis of the Research) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिये निम्नांकित परिकल्पनाएँ रखी हैं-

1) डॉ. सूर्यबाला जी के कहानी-साहित्य में मनुष्य जीवन की समस्याओं का बड़ी मात्रा में अंकन हुआ है।

2) डॉ. सूर्यबाला जी ने अपने कहानी-साहित्य में आज के मनुष्य की अकेलेपन की समस्या का बड़ा यथार्थ चित्रण किया है।

3) डॉ. सूर्यबाला जी के उपन्यास-साहित्य में दम्पति जीवन की समस्याओं की झाँकि देखने को मिलती है।

4) डॉ. सूर्यबाला जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरुष्स संबंधों के माध्यम से नारी जीवन की परिणति की वाणी दी है।

5) डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य की आलोचना पूरी मात्रा में नहीं हुई है।

- **अनुसंधान के उद्देश्य (Objectives of the Research) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं-

1) डॉ. सूर्यबाला जी के साहित्यिक व्यक्तित्त्व की बड़ी मात्रा में विवेचना करना।
2) डॉ. सूर्यबाला द्वारा लिखी गई विभिन्न कृतियों का चिन्तन किस भूमि पर उपस्थित है, यह जानना।
3) डॉ. सूर्यबाला जी के लेखन का उद्देश्य कला के प्रति अधिक समर्पित है या जीवन के प्रति, यह जानना।
4) डॉ. सूर्यबाला जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना।
5) डॉ. सूर्यबाला जी के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना।
6) डॉ. सूर्यबाला जी के साहित्य में चित्रित समकालीन परिदृश्य एवं समस्याओं का अध्ययन करना।
7) डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन करना।

- **अनुसंधान की उपयोगिता (Importance of the Research) :**

डॉ. सूर्यबाला जी के साहित्य की सही मात्रा में आलोचना नहीं हुई है। महिला लेखिका होते हुए भी उन्होंने समकालीन हिन्दी कहानी, उपन्यास तथा व्यंग्य इन तीनों विधाओं में हिन्दी साहित्य को योगदान देते हुए अपना स्वतंत्र स्थान बनाया है। समकालीन महिला लेखिकाओं को हिन्दी साहित्य जगत् में जिस मात्रा में सराहा एवं नवाज़ा, उस मात्रा में डॉ. सूर्यबाला जी को क्यों सराहा तथा नवाज़ा नहीं गया, यह जानने का प्रयास भी प्रस्तुत शोध-कार्य में होगा। इस कारण डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित विभिन्न समस्याओं का गहराई से अध्ययन कर उचित रूप से आलोचना करने का प्रयास होगा जो उपेक्षित साहित्यकारों के साहित्य पर शोध-कार्य करने वाले अनुसंधाताओं को सहायक होगा।

- **अनुसंधान पद्धतियाँ (Research Methods) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिये विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक तथा वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धतियाँ अपनायी जायेगी।

- **अध्याय-विभाज़न (Chapterization) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य का अध्याय-विभाजन निम्न प्रकार होगा-

पहला अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

दूसरा अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित पारिवारिक एवं समस्याएँ

तीसरा अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित आर्थिक एवं शैक्षिक समस्याएँ

चौथा अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याएँ

पाँचवा अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य में चित्रित मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

षठा अध्याय : डॉ. सूर्यबाला जी के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

सातवाँ अध्याय : उपसंहार एवं उपलब्धियाँ

(प्रस्तुत शोध-कार्य के दौरान मूलग्रंथों की उपलब्धता एवं समय की सीमा पर ध्यान रखते हुए अध्याय-विभाज़न में परिवर्तन की सम्भावना है।)

ग्रंथ सूचि (BIBLIOGRAPHY)

अ) डॉ. सूर्यबाला जी के मूल ग्रंथ :

- **कहानी-संग्रह**

1) **दिशाहीन मैं :** मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981
2) **थाली भर चाँद :** ज्ञानगंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988
   सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2006
3) **मुंड़ेर पर :** ज्ञानगंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990
4) **गृहप्रवेश :** ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992/ द्वि.सं. 2008
5) **साँझबाती :** किताबघर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995
6) **कात्यायनी संवाद :** सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
7) **मानुष गंध :** किताबघर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995 और
   द्वितीय संस्करण 2005
8) **पाँच लम्बी कहानियाँ :** ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003
9) **इक्कीस कहानियाँ :** सुनील प्रकाशन सदन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
   : ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2004
10) **एक इंद्रधनुष्य जुबेदा के नाम :** विद्याविहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
11) **गौरा गुनवन्ती :** भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010

- **उपन्यास**

1) **मेरे संधिपत्र :** नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977
2) **सुबह से इंतज़ार तक़ :** ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977
3) **अग्निपंखी :** ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
4) **यामिनी-कथा :** ज्ञानगंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
5) **यामिनी-कथा (मराठी अनुवाद) :** नवचैतन्य प्रकाशन, मुंबई, प्रथमावृत्ति 2007
6) **दीक्षांत :** नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण 2001

- **व्यंग्य संकलन**

1) **धृतराष्ट्र टाइम्स :** विद्याविहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003
2) **भगवान ने कहा था :** ग्रंथ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
3) **देशसेवा के अखाड़े में :** विद्याविहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008

आ) सहायक ग्रंथ :

1) **शब्द-शब्द- मानुषगंध :** सम्पा. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, ज्ञानगंगा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012
2) **सूर्यबाला के कथा-साहित्य में युग-बोध :** डॉ. वसन्तकुमार माली, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2013
3) **सूर्यबाला के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन :** डॉ. रत्नमाला धारबा धुले, विद्याविहार, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2014
4) **कथा-लेखिका सूर्यबाला :** डॉ. मोनिका ड़ावर, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008

इ) कोश-ग्रंथ :

1) 'नालंदा विशाल शब्दसागर', सम्पा. श्री नवल जी, आदिश बुक डिपो, दिल्ली।
2) 'बृहत् हिन्दी-मराठी कोश', सम्पा. श्री गो.प. नेने/श्रीपाद जोशी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे।
3) 'हिंदी साहित्य कोश (भाग 1)', सम्पा. धीरेन्द्र वर्मा।
4) 'हिंदी साहित्य कोश', सम्पा. डॉ. महेन्द्र मिश्रा, राज प्रकाशन हाउस, जयपुर।
5) 'हिंदी विश्वकोश' (भाग से 5 तक), सम्पा. डॉ. महेन्द्र मिश्रा, अरिहन्त प्रकाशन, जयपुर।

ई) संदर्भ ग्रंथ :

1) अगरवाल, साधना (1995) : 'वर्तमान हिंदी महिला कथा-लेखक और दाम्पत्य जीवन', वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

2) अमिताभ, डॉ. वेदप्रकाश (2005) : 'हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य', जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।
3) भटनागर, उर्मिला (1991) : 'हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण', अर्चना प्रकाशन, जयपुर।
4) चन्द्रा, मुद्रिता; टोप्पो, सुलक्षणा (2007) : 'आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में नारी चेतना का बदलता स्वरूप', भावना प्रकाशन, दिल्ली।
5) देशपाण्डे, वैशाली (2009) : 'स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार', विकास प्रकाशन, कानपुर।
6) ढेरीवाला, मोहम्मद (2001) : 'आधुनिक हिपदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण', चिंतन प्रकाशन, कानपुर।
7) ज्योति, अमर (1999) : 'महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि', अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर।
8) किर्ते, सविता (2007) : 'आँठवे दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री-चित्रण', विनय प्रकाशन, कानपुर।
9) पाण्ड़ेय, इन्दु प्रकाश(2004) : 'हिंदी के अधुनातन नारी उपन्यास', हिंदी बुक सेण्टर, नई दिल्ली।
10) सन्धु, मधु / तिवारी, डॉ. रामजी (2000) : 'साठोत्तरी हिंदी उपन्यास' (सम्पादन), परिदृश्य प्रकाशन, मुम्बई।
11) वेंकटेश्वर, एम. (2000) : 'हिन्दी के समकालीन उपन्यासकार', अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर।
12) द्विवेदी, विजय (1981) : 'साठोत्तर हिंदी कहानी', प्रभा प्रकाशन, इलाहाबाद।
13) डॉ. धनंजय (1995) : 'समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि', अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
14) वारद, डॉ. विजया (1993) : 'साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ', विकास प्रकाशन, कानपुर।

उ) पत्र-पत्रिकाएँ :

1) 'कथा-बिम्ब' (जनवरि-मार्च 2005)।
2) 'धर्मयुग'।

3) 'नया ज्ञानोदय' (अगस्त 2006)।
4) 'प्रकर' (अगस्त 1988, दिसम्बर 1993)।
5) 'भारतवाणी', दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़।
6) 'राष्ट्रवाणी', महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे।
7) 'विवरण', हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, नामपल्ली।
8) 'समकालीन साहित्य'।
9) 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'।
10) 'सारिका' (1972, जुलाई 1974)।
11) 'साहित्य अमृत', 4/19, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली।
12) 'हंस', अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 2/36, अन्सारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली।

स्थान : औसा

दि. : --/06/2019

शोध-छात्र

कोतवाल मजहर मक़बुल

(एम्.ए., एम्.फिल. (हिन्दी))

सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

आझाद महाविद्यालय, औसा

ता. औसा, जि. लातुर

शोध-निर्देशक

डॉ. प्रवीण विश्वनाथ कांबळे

(एम्.ए. (हिन्दी), बी.एड्., सेट, पीएच्.डी.)

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा

ता. औसा, जि. लातुर